मधुबन ओम् शान्ति अंक 336 जुलाई 2020

पत्र-पुष्प

''स्व-उन्नति निमित्त शुभ प्रेरणायें, याद पत्र''

(25-6-20)

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति लाडले, सदा अपने संकल्प रूपी बीज को कल्याण की शुभ भावना से भरपूर रखने वाले, विश्व कल्याण की सेवा पर उपस्थित सभी निमित्त टीचर्स बहनें तथा देश-विदेश के सभी ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - वर्तमान समय बाबा के सभी बच्चे माया के अनेक झमेलों से किनारा कर परमात्म मेले की मौज का अनुभव कर रहे हैं। सभी अपने-अपने स्थानों पर रहते, संकल्प रूपी बीज को शुभ भावना से भरपूर कर हर आत्मा को, प्रकृति के पांचों तत्वों को योग का दान देते सुख और शान्ति के प्रकम्पन्न फैला रहे हैं। बाबा कहते बच्चे, चेक करो कोई भी संकल्प व्यर्थ अथवा सार के बिना न हो। हर संकल्प, रहम वा कल्याण की भावना से समर्थ हो। हर सेकण्ड, हर संकल्प गोल्डन हो। हर आत्मा के प्रति स्नेह के, खुशी के सुनहरी पुष्पों की वर्षा करते रहो। यह स्नेह की वर्षा दुश्मन को भी दोस्त बना देगी। आप अपने स्वमान में रह सभी को स्नेही दृष्टि, स्नेही वृत्ति से आत्मिक मान देते चलो। वह आपको माने या न माने लेकिन आप उसको मीठा भाई, मीठी बहन मानते चलो। बोलो, ऐसी परोपकारी स्थिति बनाई है ना! बाबा अपने बच्चों को कितना निर्मान, निरंहकारी बनने की शिक्षाओं से सजाते रहते हैं।

एक ओर दुनिया में अनेक प्रकार की हलचलें हैं, दूसरी ओर बाबा के बच्चे याद और सेवा के बैलेन्स द्वारा सदा अचल स्थिति में रह आगे बढ़ते, स्वयं को सम्पन्न और सम्पूर्ण बनाने का तीव्र पुरुषार्थ कर रहे हैं। यह कितना वन्डरफुल ड्रामा है जो बाबा ने हर बच्चे को अन्तर्मुखता की गुफा में बिठा दिया है। सभी स्व-निरीक्षण करते याद की अच्छी रेस कर रहे हैं और साइंस के साधनों द्वारा वैरायटी प्रकार की सेवायें भी कर रहे हैं। हर विंग के आनलाइन सम्मेलन भी हो रहे हैं। ज्ञान योग की क्लासेज और कोर्सेज भी चलते रहते हैं। यह भी ड्रामा की न्यारी प्यारी सीन है। बाबा ने हर परिस्थिति में सदा खुश रहना और साक्षीदृष्टा स्थिति में रहना सिखाया है।

मधुबन बेहद घर के तीनों स्थान तो इस समय अव्यक्त वतन की भासना दे रहे हैं। सभी भाई बहिनें अपनी-अपनी सेवायें करते योग तपस्या में लगे हुए हैं। 24 जून को मीठी मम्मा का स्मृति दिवस भी सभी ने बहुत स्नेह और श्रधा के साथ मनाया। मम्मा की पालना लिये हुए पुराने भाई बहिनों ने उनके अंग-संग के अनुभव सुनाये। मम्मा की मीठी धारणायुक्त मुरली भी सुनी, सभी जगह मम्मा के निमित्त भोग भी लगाया गया। मम्मा ने अपनी स्थिति स्तुति के आधार पर नहीं बनाई, मम्मा दिव्यता, पवित्रता और सत्यता की मूर्ति थी। तो हम सबको भी अपने मात-पिता को फालो कर उनके समान सम्पन्न बनना ही है। बोलो, ऐसा ही लक्ष्य रख आगे बढ़ते जा रहे हो ना! सबसे अच्छा पुरुषार्थ है एक सेकण्ड में ड्रामा की बिन्दी लगाकर संकल्पों के विस्तार को सार में समेट, परमात्म स्नेह की गोद में लवलीन रहना। ऐसे ही सुन्दर समाचारों के याद पत्र, फोन ईमेल आदि सब तरफ से आते रहते हैं। बाबा के सभी बच्चे समाधान स्वरूप, डबल लाइट फरिश्ते स्थिति में उड़ते रहते हैं। अच्छा!

सभी को बहुत-बहुत याद...

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के.रतनमोहिनी

ये अव्यक्त इशारे

"सेफ्टी का साधन - मन्सा शक्ति और निर्भयता की शक्ति"

1) अन्त समय में अपनी सेफ्टी के लिए मन्सा शक्ति साधन बनेगी। मन्सा शक्ति द्वारा ही स्वयं की अन्त सुहानी बनाने के निमित्त बन सकेंगे। उस समय मन्सा शक्ति अर्थात् श्रेष्ठ संकल्प शक्ति, एक के साथ लाइन क्लीयर चाहिए। तो बेहद की सेवा के लिए, स्वयं की सेफ्टी के लिए मन्सा शक्ति और निर्भयता की शक्ति जमा करो।

2) वर्तमान समय विश्व में मैजारिटी सभी आत्माओं में भय और चिन्ता यह दोनों ही प्रवेश हैं। लेकिन जितने ही वह फिकर में हैं, चिंता में हैं उतने ही आप बच्चे शुभ चिन्तक बन शुभ भावना, शुभ कामना की मानसिक सेवा से सभी को सुख-शान्ति की अंचली देने वाले हो। अकाले मृत्यु वाली आत्माओं को, अकाल मूर्त बन शान्ति और शक्ति का सहयोग देने वाले हो।

3) वर्तमान समय सीजन ही अकाले मृत्यु की है। जैसे वायु का, समुद्र का तूफान अचानक लगता है, ऐसे यह अकाले मृत्यु का भी तूफान अचानक और तेजी से एक साथ अनेकों को ले जाता है। यह अकाले मृत्यु का तूफान अभी तो शुरू हुआ है, इसमें सेफ्टी के लिए अकाल तख्त नशीन बनने का अभ्यास करो।

4) इस विनाश ज्वाला की अग्नि से बचने का साधन है - निर्भयता की शक्ति। निर्भयता होगी तो विनाश ज्वाला के प्रभाव में डगमग नहीं होंगे। हलचल में नहीं आयेंगे। निर्भयता के आधार से विनाश ज्वाला में भयभीत आत्माओं को शीतलता की शक्ति देंगे। आत्मा भय की अग्नि से बच शीतलता के कारण खुशी में नाचेगी। विनाश देखते भी स्थापना के नज़ारे देखेगी।

5) आप बच्चों की एक आँख में मुक्तिधाम, स्वीट होम है और दूसरी आँख में जीवनमुक्ति अर्थात् स्वर्ग समाया हुआ है। अपना घर, अपना राज्य सामने दिखाई देता है। लोग चिल्लायेंगे हाय गया, हाय मरा और आप कहेंगे अपने मीठे घर में, अपने मीठे राज्य में गया। नथिंग न्यू। यह घुंघरू पहनेंगे। हमारा घर, हमारा राज्य - इस खुशी में नाचते गाते साथ चलेंगे। वह चिल्लायेंगे और आप साथ चलेंगे।

6) आज की दुनिया में धन भी है और भय भी हैं। जितना धन उतना भय में ही खाते, भय में ही सोते, और आप बच्चे बेफिकर बादशाह हो। निर्भय हो। भय का भी भूत कहा जाता है। आप उस भूत से छूटे हुए हो क्योंकि भय वहाँ होता है जहाँ मेरापन होता है। आप कहते हो मेरा बाबा। तो यह एक बाबा शब्द ही निर्भय बनाता है। उनके सिवाए कोई भी सोना हिरण भी अगर मेरा है तो भी भय है।

7) आप बच्चे ज्वालामुखी हो, डरना क्यों? मरे तो पड़े ही हो, फिर डरना किससे? तो सभी निर्भय ज्वालामुखी बन प्रकृति और आत्माओं के अंदर जो तमोगुण है उसे भस्म करने वाले बनो। यह बहुत बड़ा काम है, स्पीड से करेंगे तब पूरा होगा।

8) लोग डरते हैं मरने से और आप तो हैं ही पुरानी दुनिया से मरे हुए। तो मरे हुए को मरने से क्या डर लगेगा? आप तो हो ही ट्रस्टी। शरीर भी मेरा नहीं। लोगों को मरने का फिकर होता है, चीज़ों का या परिवार का फिक्र होता है। आप तो हो ही ट्रस्टी, न्यारे हो। देह सहित किसी में भी लगाव नहीं।

9) आप बच्चों को निर्भय और हर्षितमुख हो यह बेहद का खेल देखना है। खेल में खून भी दिखाते हैं तो प्यार भी दिखाते हैं। तो यह भी बेहद का खेल है। अगर जरा भी भय वा घबराहट होगी - क्या हो गया, क्या हो गया... ऐसा तो होना नहीं चाहिए, क्यों हो गया! तो ऐसी स्थिति वाले को इफेक्ट आयेगा।

10) सभी बहादुर हो ना? डरने वाले नहीं। यह नथिंग न्यु है। कितने बार यह हुआ है, अनेक बार रिपीट हो चुका है। अभी हो रहा है इसलिए घबराने की बात नहीं। शक्तियाँ सदा विजयी, सदा निर्भय। जब बाप की छत्रछाया के नीचे रहने वाले हैं तो निर्भय ही होंगे। जब अपने को अकेला समझते हो तब भय होता है। छत्रछाया के अन्दर भय नहीं होता। सदा निर्भय।

11) आप बच्चों को भय हो नहीं सकता क्योंकि आप सदा निर्वैर हो। आपका किसी से भी वैर नहीं है। सभी आत्माओं के प्रति भाई-भाई की शुभ भावना, शुभ कामना है। प्रकृति को भी पावन बनाने वाले प्रकृतिपति हो। तो ऐसी शुभ भावना, कामना वाली आत्मायें सदा निर्भय रहती हैं। स्वयं योगयुक्त स्थिति में स्थित हैं तो कैसी भी परिस्थिति में सेफ जरूर हैं।

12) दुनिया के लिए कुछ भी हो लेकिन आपके लिए बाप की याद एक किला है। जैसे किले के अन्दर कोई नहीं आ सकता। ऐसे याद के किले के अन्दर सेफ रहेंगे। यह तो कुछ भी नहीं है, यह रिहर्सल है। रीयल तो और है। रिहर्सल पक्का कराने के लिए की जाती है इसलिए हर सीन देखते सदा निर्भय रहना है। निर्भयता के लिए मुख्य पुरुषार्थ है - निराकारी बनना। जितना निराकारी अवस्था में होंगे उतना निर्भय होंगे। भय तो शरीर के भान में आने से होता है।

13) विजयी बनने का फाउन्डेशन है ''निश्चय'', फाउन्डेशन अगर पक्का है तो बिल्डिंग हिल नहीं सकती, निश्चिंत रहते हैं। लेकिन सिर्फ बाप में निश्चय नहीं, अपने आपमें भी निश्चय और ड्रामा में भी

निश्चय। वाह ड्रामा वाह! अगर ड्रामा में निश्चय होगा तो अकल्याण की बात भी कल्याण में बदल जायेगी।

14) जैसे कोई के ऊपर किसका हाथ होता है तो वह निर्भय और शक्ति रुप हो कोई भी मुश्किल कार्य करने को तैयार हो जाता है। इसी रीति जब श्रीमत रुपी हाथ अपने ऊपर सदा अनुभव करेंगे, तो कोई भी मुश्किल परिस्थितियों वा विघ्नों से घबरायेंगे नहीं। हाथ की मदद से हिम्मत से सामना करना सहज अनुभव करेंगे। कितना भी भयानक स्थान है लेकिन साथी शूरवीर है तो कैसा भी कमजोर शूरवीर हो जाता है।

15) जैसे पहरे वाला चौकीदार अगर शस्त्रधारी होता है और उसको निश्चय है कि मेरा शस्त्र दुश्मन को भगाने वाला है, हार खिलाने वाला है तो वह कितना निर्भय हो करके चलता रहता है। तो आपके पास भी सर्व शक्तियों रूपी शस्त्र सदा साथ हैं, सिर्फ आवाह्न करो अर्थात् मालिक बन आर्डर करो। तो सफलता सदा हुई पड़ी है

16) निर्भय सिर्फ कोई मनुष्यात्माओं से नहीं लेकिन माया के वार से भी निर्भय बनो। जो डरते हैं वही हार खाते हैं, जो निर्भय होते हैं उनसे माया खुद भयभीत होती है। जब आप भयभीत होते हो तो समझ गुम हो जाती है इसलिए माया को जीत नहीं सकते। अब शक्तिपन की विशेषता - ''निर्भयता'' प्रैक्टिकल में दिखाओ।

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* *मधुबन*

सर्व ब्राह्मण परिवार प्रति दादी रतनमोहिनी जी की शुभ प्रेरणायें

13-6-20 मधुबन

हमें चेक करना चाहिए कि मैंने मन्सा वाचा कर्मणा से कोई पाप कर्म तो नहीं किया? बाप के पास हमारा हर खाता स्पष्ट है लेकिन स्वयं को भी अपना खाता स्पष्ट करना चाहिए। सर्व के प्रति शुभ भावना रखें तब विश्व सेवाधारी बन सकते हैं। बाबा से सदा पुण्य आत्मा बनने का वरदान ले लो। किसी के लिए भी बुरा नहीं सोचो, सदा अपने शुभ भाव से परिवर्तन कर दो। पहले हम स्वयं को परिवर्तन करना है न कि अन्य को। मरजीवा बनने में ही मजा आता है। यह मरना ही जीना है, यही सच्चा जीवन है। एक बाप दूसरा न कोई ... मरना मुश्किल तब लगता है जब बाप को भूल जाते हैं। अगर बाप को सदा साथ रखेंगे तो कोई भी बात मुश्किल है ही नहीं। परोपकारी आत्मा मुश्किल को सहज बना देती है। हर आत्मा को गुण मूर्त देखना है। परोपकारी अर्थात् बाप समान हर आत्मा को गुण मूर्त से देखना।

भगवान जो सृष्टि के विधान को जानते हैं। अपनी संस्था के भी जो नियम कायदे आदि बने हुए हैं वो हम देख रहे हैं, उनको हम अच्छा ही समझकर क्यों न अपने को उसी प्रमाण चलायें। हम सभी चैतन्य आत्मा हैं, हम सत्य स्वरूप हैं, अपने को उसी सत्यता की रीति से चलाते चलें। स्वयं को अनुशासन में चलाने के लिए यह संगठन बना है। परन्तु परमात्मा के कार्य को न पहचानने के कारण पूर्ण रूप से चल नहीं सकते। सृष्टि का भी सारा कार्य नियम से चलता रहता है। जैसे शरीर को चलाने के लिए हम नियम से उठते, नियम से खाते पीते, सब कुछ नियम से करते हैं। हमारे कुल की ये मर्यादायें हैं। परिवार में भी जो नियम हैं उनका हम पालन करें। स्कूल में भी पढ़ने जाते हैं तो उनके लिए नियम होते हैं, जो पढ़ते हैं उनको वह नियम बताये जाते हैं। जिस देश में जहाँ जो रहते हैं वहाँ के नियमों का पालन करते हैं। तो हम भी देखें कि जहाँ हम रहते हैं वहाँ के नियमों का पालन कर रहे हैं! हम अनुशासन पूर्वक चल रहे हैं? कोई हमको कन्ट्रोल करे तब हम चलें, इससे तो क्यों नहीं हम जो डिसीप्लेन हैं, उसी अनुसार चलें। हम नियमों को जानकर कर्म करें तो वह संचालन करने वालों को मदद देते हैं। हम संगठन में रहते हैं तो अपनी मनमत से नहीं चल सकते हैं। हम संस्था में रहते हैं तो संस्था के नियम बने हुए हैं, हमें उसी प्रमाण चलना करना है। मन वचन कर्म के लिए जो नियम बने हैं, उसी प्रमाण चलना है। कुदरत ने जो हमें सोचने, समझने का आइना दिया है, उसी प्रमाण हमें कर्म करना है। आत्मा में जो बुद्धि है, वो निर्णय करती है कि हमें कैसे चलना है। ज्ञान के साथ विवेक भी होता है। शान्त, प्रेम, आनंद इन गुणों को धारण कर विवेक से अपने को चलाना है।

योगी माना कोई देखे या न देखे, हम अपने को देखें कि हम सबके बीच में हैं या अकेले हैं? सोचना है कि सेन्सीबुल इन्सान कैसा होना चाहिए। जैसे बीज को पानी देने से पूरे वृक्ष को पानी मिल जाता है। ऐसे हमारे से सारे वृक्ष को शक्तियां मिलती हैं। बाप हमें जो ज्ञान देते हैं उसको अपने अन्दर धारण कर चलना है। हमें आत्म अभिमानी रहने का गुप्त पुरुषार्थ करना हैं, तो हमारी दृष्टि वृत्ति पवित्र हो जायेगी। हर एक ब्राह्मण बच्चे को अपने ऊपर यह अटेन्शन जरूर देना है। अच्छा। ओम् शान्ति।

“योगी जीवन का आधार - सम्बन्ध और प्राप्ति ”

(रिवाइज 1999)

(गुल्जार दादी जी)

वर्तमान और भविष्य के लिए शक्तियां जमा करने के लिए आप सभी तपस्या कर रहे हो। यहाँ के वातावरण अनुसार सहज योगी जीवन का अनुभव होता है। हम कोई योग लगाने वाले योगी नहीं हैं लेकिन हम योगी जीवन वाले हैं, हमारी जीवन ही योग सहित है। जीवन दो घण्टे, चार घण्टे के लिए नहीं होती है, जीवन निरन्तर साथ में है। तो हम योगी जीवन वाले हैं क्योंकि भोगी जीवन तो हमने छोड़ दी। हम कहलाते ही हैं ब्राह्मण अर्थात् योगी जीवन है और जीवन सदा है, जब तक जिन्दा है तो जीवन है। जीवन में होते हुए हमको योगी जीवन वाले ही बनना है। जैसे आत्मा और शरीर एक दो से अलग हो जायें तो जीवन ही खत्म, ऐसे ही बाबा कहते हैं योग और जीवन सदा साथ हो। ऐसे नहीं कि दो-चार घण्टे का योग लगाया, अच्छा जब योग नहीं था, तो क्या था? भोगी जीवन से तो हम थक गये, हमारे 63 जन्म भोगी जीवन में गये। अब भोगी जीवन से थक कर निराश होकर हम लोगों ने योगी जीवन बनाई, जिसको बाबा दूसरे शब्दों में कहते हैं कर्मयोगी।

कर्म करते हुए भी हम योगी हैं क्योंकि हम सभी कहते हैं कि बाबा ही हमारा संसार है। तो सभी दिल में सोचें कि क्या बाबा ही हमारा संसार है? यह हमारा अनुभव है या ऐसे ही कहते हैं - बाबा मेरे साथ है, बाबा ही हमारा सब कुछ है। बाबा की याद तो मेरे मन में, दिल में समाई हुई है। जो हम कहते हैं, उस अनुसार अगर संसार ही मेरा बाबा है। तो हर कर्म करते हुए बाबा भूल सकता है? क्योंकि संसार ही बाबा है। तो संसार में चलते, कार्य करते जब बाबा ही संसार है तो सिवाए बाबा के और क्या है? बाबा की याद ही योग है और हमेशा हम कहते हैं - बाबा मेरे साथ है, बाबा मेरा साथी है। जब साथ है तो साथ वाला साथ में बैठा हो फिर हम भूल कैसे सकते हैं।

जब सर्व सम्बन्ध भी हमारे एक बाबा से ही हैं, जिससे सम्बन्ध होता है और साथ में है, वह भूल नहीं सकता है। तो हम कहते हैं बाबा मेरा सर्व सम्बन्धी है। एक सम्बन्ध भी नहीं कहते हैं, सर्व सम्बन्ध हमारा बाबा के साथ है। वैसे भी देखा जाए तो इस आयु में मनुष्य के विशेष तीन सम्बन्ध होते हैं जो आवश्यक हैं। पिता, शिक्षक और सतगुरू, और भी सम्बन्ध हैं, फ्रैन्ड भी है, माँ भी है... लेकिन विशेष कार्य वा कनेक्शन जो होता है वह विशेष इन तीन से होता है। तो हमारी याद बहुत सहज है। वहाँ लौकिक जीवन में पिता अलग होता है, शिक्षक अलग होता है और सतगुरू तो है ही नहीं, गुरू है लेकिन वह भी अलग होता अगर इन तीन सम्बन्धों को भी याद करो तो अलग-अलग याद करना पड़ेगा। बाबा ने इतनी सहज याद हमको दी है कि एक में सब याद करो, एक ही को याद करो। उसमें सब आ जायेगा।

याद उसकी आती है जिससे हमारा सम्बन्ध होता है। दूसरी बात - याद उसकी आती है जिससे कोई प्राप्ति होती है। भले हमारा सम्बन्ध नहीं हो लेकिन कोई चीज़ की आपको आवश्यकता है, वह आवश्यकता समय पर कोई पूरी कर दे तो आप उसको स्वत: ही याद करेंगे क्योंकि प्राप्ति है। मानो कोई एक्सीडेन्ट हुआ, कुछ चोट लगी और आपको उस समय किसी ने मदद की तो आपके मुख से क्या निकलता है? जीवन भर आपको नहीं भूलूँगा। तो बाबा ने कितनी प्राप्तियां कराई हैं? जीवन में वास्तव में तो सुख, शान्ति, प्रेम, ज्ञान, आनन्द यही चीज़ें चाहिए। कितना भी कोई प्रयत्न करता है, चाहे मजदूर है, चाहे पदमपति है लेकिन उन दोनों से पूछो आप इतनी मेहनत क्यों करते हो? तो यही जवाब देंगे कि मैं और मेरा परिवार सुखी रहे, इसके लिए ही यह सब करते हैं। लेकिन बाबा ने हमको सब दे दिया है। ऐसे नहीं सुख दिया तो शान्ति दूसरी जगह लेना है। सर्व प्राप्तियों का आधार हमारा बाबा है। तो प्राप्तियां भी हैं, सम्बन्ध भी सब एक से हैं। वैसे अनुभव भी होगा कि जब कोई विघ्न आता है, कोई बात या समस्या आ जाती है तो उस समय मन परेशान हो जाता है। और उस समय समझो कोई देहधारी आपका साथी फ्रैन्ड या कोई भी व्यक्ति जिसको आप दिल से चाहते हो, अगर वह आपके सामने नहीं है तो सोचते हो कि अब क्या करें? क्योंकि देहधारी मित्र तो सदा साथ रह भी नहीं सकता। लेकिन बाबा को अपना सच्चा मित्र बना लो और अपने दिल की बातें उससे करो, तो दिल सदा हल्की रहेगी। परेशान नहीं होंगे। बाबा कहते तुम दिल से कहो ‘‘मेरा बाबा’’ तो मैं उसी समय तुम्हारे सामने हाज़िर हो जाऊंगा। अपना बोझ बाबा को दे दो, अपनी जो भी परेशानी है, वह बाबा को दे दो। बाबा इस बात को आप ही जानो। मैं तो न्यारा हूँ, मैं तो छोटा बच्चा हूँ। आप बाप हो, आप मेरे मित्र हो दिल से। सिर्फ कहने मात्र नहीं। वह तो भक्ति में भी गीत गाये - आप ही मेरे मात-पिता, बंधु सखा हो... लेकिन दिल से बाबा कहो और सब बोझ बाबा को दे दो। तो एक सेकेण्ड में

आप अनुभव करेंगे कि मेरा बोझ बाबा ने ले लिया और मैं डबल लाइट हो गया।

लेकिन बाबा कहते हैं कंडीशन है कि मैं सब कुछ करने के लिए तैयार हूँ, बाप हूँ, आया ही हूँ आपके पाप मिटाने के लिए, पावन बनाने के लिए ....आप अपना बोझ मेरे को दे दो, मैं उठा लूँगा। लेकिन सिर्फ मतलब से याद नहीं करो। कोई बात आई उस समय कहो बाबा आप तो बस मेरे हो ... ऐसे बाबा-बाबा करो और बात पूरी हुई तो बाबा परमधाम में और मैं यहाँ... तो यह हुई स्वार्थ की याद। तो बाबा को स्वार्थ प्यारा नहीं, दिल का प्यार चाहिए। अगर दिल का प्यार है तो बाबा दिलाराम है। दिलाराम दिल को आराम नहीं दे, यह हो ही नहीं सकता, असम्भव है। सिर्फ दिल सच्ची होनी चाहिए, बस। बाबा कहता है मुझे सबसे प्रिय वह है जिसकी दिल साफ और सच्ची है। बस और मुझे कुछ नहीं चाहिए। तो ऐसे बाबा से हमको सब मदद मिल सकती है। हमारा बोझ उठा सकता है जब बोझ बाबा ने उठा लिया तो हम तो बहुत मौज में रहेंगे। कोई समस्या नहीं, कोई फिकर नहीं, बेफिकर बादशाह, बेगमपुर के बादशाह हो गये।

प्रवृत्ति में आजकल के जमाने में एक फिक्र जाता है तो दस आते हैं लेकिन वह हमारे लिए नहीं है क्योंकि हमारे पास आया, हमने बाबा को दे दिया, बस। हम बेफिक्र बादशाह। दिल से दिया, दिल से बाबा को साथी बनाया तो कोई फिक्र नहीं। आप कहेंगे शिवबाबा तो है निराकार, हम तो साकार में हैं, लेकिन ब्रह्मा बाबा भी तो हमारे जैसा ही साकार था। अन्तिम जन्म था, आयु भी वानप्रस्थ अवस्था की थी, सब अनुभव था, व्यापार का, प्रवृत्ति का, भक्ति का.... सब अनुभव था। ब्रह्मा बनने के बाद भी कितनी आत्माओं के जीवन की जिम्मेवारी थी, फिर भी बेफिक्र रहे। और यह नया क्रान्तिकारी काम था, उस समय दुनिया के आगे यह एक चैलेंज थी। पवित्रता की बात जो लोगों के लिए असम्भव थी, कहते थे आग और कपूस साथ कैसे रह सकते हैं। साथ रहें और विकारों की आग न लगे यह तो असम्भव है। तो आप सोचो बाबा के सामने कितने विघ्न आये होंगे। फिर भी बाबा बेफिकर बादशाह। ऐसे बाबा कहते बच्चे फालो करो। जब भी ऐसी कोई बात आती है, तो ब्रह्मा बाबा का सैम्पुल सामने देखो।

हमने बाबा को बचपन से देखा है, कभी भी बाबा के चेहरे पर फ़िकर की लहर नहीं देखी। बाबा को दो शब्द बहुत पक्के थे - बच्चे, नथिंग न्यु। दूसरा - यही शब्द बाबा के मुख पर था - बच्ची, जिम्मेवारी शिवबाबा की है, हम तो निमित्त हैं। बाबा बैठा है। कुछ भी ऐसी बात हो जाये तो बाबा कहता बच्ची, इसमें भी अच्छाई भरी हुई है। मानो कुछ बुरा भी हो गया और हो रहा है लेकिन फिर भी बाबा कहते थे जो हो रहा है वो अच्छा, और जो हो गया है वो बहुत अच्छा, और जो होने वाला है वो और ही बहुत-बहुत-बहुत अच्छा। यह बाबा का स्लोगन था। बाबा बुराई से भी अच्छाई निकाल, निगेटिव को भी पॉजिटिव नज़र से देखते थे। कोई निगेटिव बात हो गई या मन में आ गई, तो कहते हैं यह तो बुरा हो गया, शिवबाबा तो भूल गया। उसी को ही सोचने में लग जाते हैं लेकिन ऐसे बुराई में अच्छाई क्या लेनी है। क्यों हुआ यह बुरा, जरूर कोई हमारी ही कमजोरी का कारण होगा।

हमने गलती नहीं की दूसरे ने की, इसलिए इसमें हमारा तो कोई कसूर नहीं है, इसने ही किया... लेकिन बाबा कहता था अच्छा उसने कसूर किया, आपने नहीं किया, इसलिए आप बहुत सच्चे और अच्छे हो लेकिन उसने समझो क्रोध किया और हमने उसके क्रोध को फील किया। मेरे पास फीलिंग की बीमारी आई। तो वह बीमार हुआ क्रोध में और आप बीमार हुए फीलिंग में, तब तो मन चल रहा है। अन्दर धारण हुआ, तभी तो आपके मन में क्यों, क्या, संकल्प चल रहे हैं। बाबा का स्लोगन क्या है - न दुःख दो, न दुःख लो। देना तो नहीं है लेकिन दूसरा कोई देता है तो लेना भी नहीं है, तब तो अच्छा-अच्छा हुआ। जो बुरा काम हुआ उसको निगेटिव से पॉजिटिव में परिवर्तन कर उससे शिक्षा ले लो। तो आगे से मुझे क्या शिक्षा मिली, आगे से मुझे अपने में क्या करेक्शन करनी है? यह सोचो तो निगेटिव भी पॉजिटिव हो जायेगा। तो ऐसी बाबा की शिक्षा थी, ब्रह्मा बाबा की प्रैक्टिकल लाइफ थी। तो क्या ऐसा हम अपनी लाइफ में प्रैक्टिकली नहीं कर सकते हैं। बेफिक्र बादशाह हम नहीं बन सकते हैं? जैसे बाप ने किया वैसे हम करें, तो हो सकता है, इसीलिए हमारा योग नीचे करने वाली, यह निगेटिव बातें होती हैं।

एक निगेटिव और दूसरा व्यर्थ। छोटी सी बात को बड़ा करना, यह हमारे हाथ में है। बड़ी बात को छोटी करना - यह हमारे हाथ में है। यह नेचर होती है। बड़ी बात को नथिंग न्यू समझो, मुझे भविष्य के लिए क्या करना है, वह सोचो और फुलस्टॉप लगाओ क्योंकि बीती को सोचने से फ़ायदा? कुछ नहीं। हो गया उसको सोचने से फायदा क्या है? बदल जायेगा, नहीं। वह तो हो गया। जैसे कहते हैं कि तीर कमान से निकल गया, वह फिर वापस आयेगा क्या? नहीं। इसीलिए योगी जीवन है हमारी, योगी जीवन में बेफिक्र बादशाह है तो योग लगेगा। कोई फिक्र है यह क्यों हुआ, यह क्या हुआ, यह कैसे हुआ... यह फिकर होगा तो फिर योगी जीवन नहीं होगी। दो घण्टे के योगी, चार घण्टे के योगी और बाकी भोगी हुए और क्या हुए? तो ऐसी हमारी निरन्तर योगी जीवन हो।

विदेही का अर्थ ही है - देह में हैं लेकिन देह की कोई भी आकर्षण, देह के सम्बन्ध, देह के पदार्थ, कोई भी हमको अपने तरफ नहीं खींचे। अच्छा। ओम् शान्ति।

“निमित्त आत्मायें खुशनुमः, खुशमिजाज हैं तो सबके आधारमूर्त और उद्धारमूर्त बन सकती हैं”

(दादी जानकी)

कहा जाता अन्त मति सो गति। हमारी गति संकल्प के आधार पर बनी हुई है। हमें अपनी अवस्था जमाने का बहुत शौक हो। हम अभी अवस्था जमा रहे हैं। अवस्था जमाने के लिए अभी ख्याल आया। जैसे बिल्डिग बनाने के पहले फाउण्डेशन खोदते हैं, अगर फाउन्डेशन न हो तो खतरा है। पहले खोदते हैं फिर पिल्लर लगा देते हैं। हम जैसे यज्ञ के पिल्लर हैं। एक बारी किसी ने कहा था कि मैं क्या सेवा करूँ? तो मैंने कहा यज्ञ का पिल्लर बन जाओ। आप सब यज्ञ के पिल्लर हो। पिल्लर मजबूत हो क्योंकि उसके सहारे बिल्डिग खड़ी है।

मुझ आत्मा को परमात्मा ने क्या पार्ट दिया है, उसको मैं समझू। मैं आत्मा हूँ, यह समझा पर मुझ आत्मा का क्या पार्ट है! एक्टर हमेशा यह देखता है कि मेरा क्या पार्ट है! वो औरों को नहीं देखता कि उसका क्या पार्ट है। उसको शायद डिसमिस भी कर दें कि ये अपने पार्ट की रिहर्सल नहीं कर रहा है। ड्रामा का डायरेक्टर, क्रियेटर हमारा बाप है। वो खुद भी अपना पार्ट बताता है, मेरा यह पार्ट है। ब्रह्मा बाबा के शरीर का आधार लिया है। अगर यह आधार न होता तो वो भी कुछ नहीं कर सकता। इसके साथ वो न होता तो इसको डायरेक्शन कौन देता। इससे कौन कराता! करावनहार वो है, करनहार ये है। करावनहार और करनहार दोनों हमारी आंखों के सामने खड़े हैं। तो हम सब बाबा को देखकर, समझकर ही बी.के. बने हैं। मेरा आधार कौन, मैं किसी भी देहधारी का आधार नहीं लूँ, पर निमित्त बनके सहयोग भले दूँ। सपोर्ट और सहयोग में फर्क है। सपोर्ट है, तो उसके बगैर चल नहीं सकेगा। सहयोग जब आवश्यक है तो दिया तो पुण्य कर्म बन जाता है। अधीन किसी को नहीं बना रहे हैं, पर ईश्वरीय स्नेह का सहयोग दे रहे हैं। जहाँ जिस प्रकार की आवश्यकता है, वहाँ स्नेह से सहयोग देने में बड़ी दिल है। इसमें दिल कठोर न हो, कहाँ सहयोग देना हो तो मैं एवाइड न करूँ। ये दाता के बच्चे के संस्कार नहीं हैं। हमें अवस्था जमानी है। अवस्था मजबूत होगी तो पिल्लर स्वत: बन जायेंगे। पिल्लर कुछ करता नहीं है, पर पिल्लर के बगैर बिल्डिग पूरी नहीं होती।

विजय हुई पड़ी है, वो टल नहीं सकती। इसमें हमको सोचने की जरूरत नहीं है। फाउण्डेशन मजबूत बनायें, तो ये क्या हुआ, क्यों हुआ ये हमको आधारमूर्त, उद्धारमूर्त बनने नहीं देगा। आजकल रीसर्च बहुत करते हैं, देखते हैं कि ये काम की चीज़ निकली। हरेक आत्मा अभिमान में जकड़ी हुई थी। जिस कारण मोटे विकार गये तो छोटे विकार बैठे हुए हैं। ऊपर से गये पर अन्दर से नहीं गये हैं। जिस कारण आत्मा सदा खुशनुम:, खुशमिजाज़ नहीं है। अगर खुशमिजाज़ है तो उद्धारमूर्त, आधारमूर्त हैं। हमारा खुशनुम: चेहरा, चलन कई आत्माओं को सहारा देता है। विदेश में बच्चे बड़े उदास होते हैं क्योंकि किसी को माँ सम्भालती होगी तो किसी को बाप। यहाँ भी जैसे सिंगल पैरेन्ट हैं। या माँ रूप में प्यार नहीं लिया है या बाप से कुछ मिला नहीं है। सिंगल पैरेन्ट वालों की सूरत देख तरस पड़ता है, कोई को माँ-बाप दोनों नहीं होते हैं। कोई कहते हैं मुझे माँ का प्यार नहीं मिला। बाबा ने कहा अलग-अलग याद करो, अलग-अलग वर्सा मिलेगा। जो परमात्मा के गुण हैं वो ब्रह्मा बाबा के कर्तव्य में अनुभव किये हैं। माता-पिता, टीचर, सखा, सतगुरु पांचों ही सम्बन्ध एक के साथ रहे हैं। मात-पिता की अच्छी लोरी मिली हुई है। ब्रह्मा माँ, वो बाप। फिर शिक्षक फिर सखा।

संकल्प क्या है, चींटी है। अगर सूक्ष्म पुरुषार्थ में भी कोई चींटियां आ जाती हैं तो हैरान होने की क्या बात है, लगाव स्प्रे। आदत और स्वभाव में भी फर्क है। स्वभाव के वश हो जाते हैं, आदत से मजबूर हो जाते हैं। छोड़ नहीं सकते हैं। आदत मजबूर बनाती है। तो हमको कोई भी प्रकार की आदत मजबूर न करे। हरेक चार्ट लिखे कि इस आदत के मजबूर थी, जो छूटी। मैं किसी स्वभाव के वश हो जाती थी, वो छूटी। किसी का तेज स्वभाव है। मेरे जैसा भोला-भाला क्या जाने। इतनी ताकत आती जाये जो नेचर चेन्ज हो जाये, उसका इफेक्ट मेरे को न आये। अगर इफेक्ट आया तो बाबा मेरे को क्या कहेगा! छुईमुई.. यही बोलेगा ना। डोन्ट टच मी ऐसे नहीं, परीक्षायें तो आयेंगी, इसलिए स्वमान में रहना, अपने आप को सम्भाल के रखना। ऐसे नहीं किनारा करके सम्भालना, वो भी कमजोरी है। न्यारा रहके सम्भालने में कमजोरी नहीं है।

डिटैच रहना आसान है, कुदरत का नियम है, एक अंगुली दूसरे से अलग है। कुदरत डिटैच रखती है, अटैच होना अवगुण है। अटैच रहने वाले सच्चे योगी नहीं बन सकते हैं। हम रीयल योगी खुद के शरीर से डिटैच, सम्बन्ध से भी डिटैच, कर्म से भी डिटैच। डिटैच, न्यारे, साक्षी और उपराम इन सबमें फर्क है। ये अनुभव के आधार पर स्टेजेज़ हैं। डिटैच रहने का आर्ट नहीं है, तो न्यारा होकरके पार्ट नहीं बजा सकते, ड्रामा प्लेन अनुसार हर आत्मा न्यारी है, पार्ट उसका न्यारा है। समय अनुसार सेम पार्ट उसका चलता ही नहीं है। हर मिनट पार्ट न्यारा है। हम मूर्ख बुद्धि क्या करते हैं? जो बात बीती उसको सामने रखकर बैठे हैं, बात प्रेजेन्ट है नहीं। वो व्यक्ति है नहीं पर उसकी बात जो है, बोल जो है, जैसे अभी-अभी मेरे से बोल रहे हैं। ये सीधे शब्दों में मूर्खता है। बाबा के सामने मन बोल नहीं सकता, इतनी बाबा में ताकत है। जब खुद के स्वभाव वश चलते हैं तो मन चलता है।

बाबा कहता है प्रकृति जीत बनो। आत्मा तो एक ही है। मन-बुद्धि-संस्कार हैं। परमात्मा और आत्मा में क्या अन्तर है, ये क्लीयर है। बुद्धि में परमात्मा के गुणों का पता है। आत्मा परमात्मा से सम्बन्ध रखे, तो देह सहित देह के सम्बन्धों से मुक्त हो जाती है। फिर है मायाजीत। माया को समझ लिया उसके अधीन हो गये थे। बाबा से शक्ति लेकर परखने की शक्ति आई है। माया के बहुरूप हैं, समझके मायाजीत बने हैं। यह माया प्रकृति में भी प्रवेश हो गई है। फिर प्रकृति द्वारा आत्मा में प्रवेश हो गई है। परमात्मा से अलग हो गई है। साधन प्रकृति की रचना हैं। मनुष्यात्मा उसके अधीन हो गई है। बाबा ने यह साधना सिखाई है, इसके अधीन नहीं बनो। ये प्रकृति की रचना है। इसके आधार पर चलने वालों का इगो खत्म नहीं होगा। अधीनता गई, पर आधार भी इनका नहीं चाहिए। प्रकृति का भी पति हूँ। या तो हम कहते हैं - आत्मा परमात्मा का पिता है, प्रकृति मेरी माँ है। इस समय कईयों को जहाँ-तहाँ खाना नहीं है, पानी नहीं है। धरती पर पाप हो रहा है, तभी खाना नहीं मिलता है, रहने को जगह नहीं मिलती है।

आत्मा परमात्मा से अलग हुई है, अधीनता के कारण माया प्रवेश हुई है। प्रकृति के अधीन है। अभी हम चेन्ज हो रहे हैं। दुनिया वाले आकाश, चाँद, सितारे देख खुश होते हैं। यह सतयुग में भी होंगे। सतोगुणी दृष्टि से इस प्रकृति को भी सतोप्रधान बनाना है। आत्मा अन्दर से सतोप्रधान बनके शरीर को सतोप्रधान बना रही है। किचड़ पट्टी समाप्त कर रही है। देखना है कि किचड़ा जा रहा है या ऐसे ही योग में बैठे हैं। सचमुच पूछो, जैसे मम्मा-बाबा ने बैठ तपस्या की है, ऐसी तपस्या किसने की है। बाबा ने अन्त तक सेकेण्ड भी कोई बात सोचने नहीं दिया। ऐसी बाबा जैसी तपस्या, जिसमें हरेक समझे हम यज्ञ के फाउन्डर हैं, पिल्लर हैं। यज्ञ तो क्या सारा कल्प हमारे आधार पर खड़ा है। सर्व धर्मों का आधार हम हैं। वो भी धर्मात्माओं को भी लगता है कि आप ही हमारे पूर्वज हो। ऐसी बातों का सिमरण करके अपनी शक्ति बनाके रखें तो स्मृति-स्वरूप रहेंगे। जो मीठा बाबा कहता है उसका सिमरण कर, चिन्तन से फ्री होना है। हरेक अपने अन्दर देखे मैं चिन्तन से फ्री हूँ या नहीं? चिन्ता तो किसी बात की आ ही नहीं सकती, पर चिन्तन से भी फ्री। सिमरण और चिन्तन में भी फर्क बहुत है। चिन्तन उल्टा चल जायेगा। सिमरण उल्टे को सीधा कर देगा। मेरे को तो सीधा करता ही है, दूसरे को भी वायब्रेशन से सीधा कर देगा। कोई को कोई प्राब्लम आई, स्नेह के बल से ठीक हो गई। बाबा हमको कैसे ठीक रखता है। अव्यक्त होके वतन में कोई शान्त करके बैठा है क्या! अव्यक्त में बैठके हमको और भी अच्छी ताकत और पालना दे रहा है। पालना, पढ़ाई, प्राप्ति तीनों जो मिली हैं, कहाँ की हैं? याद दिला रहा है। अन्तर की आंख खोल के देखो। पर बाहर देखने की जो आदत है, तो कहते हैं कैसे न देखूँ। वो करता रहे, तू देखती रहो। ऐसा करने वाले हैं, बोलने वाले हैं, समझें तो सही मैं क्या बोलता हूँ। आप अपनी करो। बीच में किसी आत्मा को भी अन्दर न लाओ, न तुम दो आत्माओं के बीच में जाओ। मिया बीबी लड़ेंगे भी फिर बनेंगे भी। तुम बीच में फंस जायेगा। चिन्तन करने से सुधरेंगे नहीं, पर शुभचिन्तक बनने से वन्डर हो जाता है। दोनों को ताकत मिलती है। अगर हम शुभ-चिन्तक नहीं रहते हैं, तो उनका आपस में हिसाब-किताब है। जिसका बनना शुरु हुआ, तो जल्दी खत्म नहीं होता है। अभी दोनों के बीच में आप गई तो क्या होगा! उस हिसाब-किताब में तुम भी फंस गई। हमें न्यारा, निर्लेप, निर्मोही रहना है। ऐसे अपने आपको सम्भाल के चलना है। सम्भाल के चलना माना कोई डर नहीं है, पर मिसाल तो कोई बने। हरेक कहेगा मुश्किल है। तो कौन है प्रभु का प्यारा। बाबा प्यार तो सबको करता है, किसको खास प्यार करता है, ये भी तो बताता है। तो मैं खास में क्यों न जाऊं। रीस नहीं करनी है, पर भाग्य क्यों छोड़ूँ। परन्तु भाग्य मेरे संकल्प से है, सम्बन्ध रखने से है। कुछ भी हो जाये, सम्बन्ध मुझे अच्छा बनाके रखना है। जितना बाबा के साथ उतना बाबा के परिवार के साथ। तो सतयुगी संस्कार इमर्ज हो जायेंगे। हमको लक्ष्मी-नारायण की कथा करके, सच की नैया में बैठके बेड़ा पार होना है।

माया क्या है, महारथी के आगे तो चींटी है। पांव के नीचे आती है, तो वहीं खत्म हो गई बिचारी। पर कान में कोई बात आती है तो कैसा हाल होता है! अच्छा घोड़ेसवार बना है तो जम्प लगा। जम्प भी नहीं लगाता है, हिम्मत हार दी तो बना प्यादा। कान में बात गई तो कितनी नुकसानकारक है। सुनके हाँ कहना भी भूल है। मम्मा ने कभी ऐसे बैठके सुना नहीं होगा, हाँ नहीं कहा होगा। सुनी तो सुनायेंगे, उसके लिए समय नहीं है। जरूरत नहीं है। बातों में जाना माना कांटों के जंगल में जाना। हमको तो बाबा ने रोज (Rose) गार्डन बनाने की सेवा दी है, ना कि कांटों का जंगल बनाके बैठो। जहाँ एक दो को कांटा लगाते रहो। महारथी वह नहीं है जिसने सेकेण्ड में बात सुनी, बस शक्ल उतर गई, नींद फिट गई। वह तो घोड़ेसवार से हटकर प्यादे की लाईन में आ जाता है। उसे चला भी नहीं जा रहा है, कहेगा मुझे छोड़ दो। हमें प्रत्यक्ष प्रमाण रूप बनना है। जो प्रत्यक्ष है, तो उसको प्रमाण देने की कोई जरूरत नहीं है।

बाबा का गार्डन है, अन्दर जाकर कूड़ा किचड़ा निकालो, जिससे सदा गार्डन दिखाई पड़े ना। सेवायें बाबा इतनी कर करा रहा है। पर हम अपने लिये क्या कर रहे हैं। बाबा कैसे आत्माओं को अच्छे-अच्छे अनुभव कराके उमंग-उल्लास दिलाता है। हमारा उमंग-उल्लास कभी कम नहीं होना चाहिए। जैसे हमारी दादी का कभी उमंग कम नहीं देखा। उमंग-उल्लास तब रहता है जब अन्दर हिम्मत होती है। हिम्मत सारी लाइफ में कभी छोड़ी नहीं होगी। हिम्मत से बाबा की मदद है। हिम्मत से उत्साह है, उत्साह से उमंग है। उमंग सिर्फ आता है, उत्साह नहीं है। तो खुशी नहीं है। जो निमित्त है, उसको ही खुशी नहीं है तो दूसरे बिचारे ठण्डे ठाकुर पहले से ही हैं। निमित्त वाले ऐसे बैठेंगे तो सबका क्या हाल होगा। इसलिए किसी कारण से भी हिम्मत पुरुषार्थ में हारी तो कभी वैजयन्ती माला में नहीं आयेंगे। ओम् शान्ति

सम्पन्नता और सम्पूर्णता का अनुभव - दादी प्रकाशमणि जी के शब्दों में

1) मैं अपने आपसे पूछती हूँ - मेरा फुल कनेक्शन एक बाबा के साथ है? बाबा से मेरी बुद्धि की लाइन क्लीयर है? बाबा मेरे से सदा सन्तुष्ट है? बाबा के पास मेरी कोई कम्पलेन तो नहीं है? मेरे में कोई अणु जितना दाग तो नहीं है?

2) मैं अपने डायमण्ड को अपने नेत्रों के सामने लाकर उसे दिव्य नेत्र से देखती हूँ कि मुझ डायमण्ड में अभी तक कोई फ्लो तो नहीं है? जैसे हीरे को आईग्लास में देखा जाता, मैं भी आईग्लास में अपने को देखती हूँ, मेरा बाबा मेरे लिए आई ग्लास है। मैं बाबा के पास ऊपर चोटी पर बैठ देखती हूँ कि बाबा के गुणों के समान मेरे में सर्वगुण भरतू हैं या नहीं? जब बाबा ने मुझे सच्चा डायमण्ड बनाया है तो मुझ डायमण्ड में कोई भी दाग नहीं रहना चाहिए। मैं सदैव दो शब्दों का ध्यान रखती हूँ - 1- अब 2- सब। अगर कोई दाग है, कमी है तो उसे अभी ही निकालना है और सभी दाग निकालने हैं।

3) कई बार मुझे ऐसे लगता जैसे बाबा मेरे कानों में यह आवाज देता - बच्ची, तुम्हारी रीति है एक सेकण्ड में पंछी उड़ जा, हम सब पंछी एक सेकेण्ड में उड़ जायेंगे। मैं एक सेकेण्ड का पंछी हूँ, यह सेकेण्ड, यह मिनट, घण्टे, दिन बीता, रात सोये, सवेरे उठे, तो यह मेरे सेकेण्ड, मिनट, घण्टे कितना कमाई में जमा हुए? रोज़ मैं यह चेक करती हूँ।

4) बाबा हमें रोज़ यह स्लोगन देता कि बच्ची तेरे भाने सर्व का भला, तेरी चढ़ती कला माना सर्व का भला। तो मैं हमेशा सोचती कि मेरा एक-एक सेकण्ड कमाई में बीते, ऐसे नहीं अलबेले होकर रात को सोया, दिन को खाया, हँसा बहला। दिन रात पूरा हुआ। हमें तो आता कि यह संगम के थोड़े दिन कितने न महान हैं! यह गिनती के दिन हैं, यह कितने वैल्युबुल दिन हैं! ऐसा सोचकर अन्दर ही अन्दर सम्पन्न बनने की मेहनत करती हूँ, लक्ष्य रहता है मुझे तो बाप समान कर्मातीत बनना ही है।

5) मुझे बाप समान बनना है, तो अब बनना है। फुल त्याग, फुल तपस्या, फुल सेवा मुझे अभी करनी है। मेरी फुल लगन बाबा के साथ अब होनी चाहिए। दूसरा मैं सर्वशक्तिवान बाप की बच्ची हूँ तो मेरे में सर्वशक्तियां होनी चाहिए, फुलफोर्स होना चाहिए। मैं अपने अन्दर यह सोचती हूँ और सोचते-सोचते बाबा के अन्त में चली जाती हूँ।

6) सारा ब्राह्मण परिवार, सारा भारत, सारी विश्व हमारे सामने है, मुझे सर्व को सन्तुष्ट करना है। सारे विश्व को योगदान देना है। सारे विश्व का कल्याण करना है। तो जब बाबा मेरे से सर्व में सन्तुष्ट है, बाबा के पास मेरा रिकार्ड ठीक है तभी मैं यह कार्य कर सकती हूँ।

7) मैं यह भी देखती हूँ कि सर्व के लिए मेरे अन्दर शुभ भावना है? मैं ऊपर में जाकर देखती हूँ कि मेरी वृत्ति साफ पवित्र और सुन्दर है? शुभ भावना है? फिर भी अगर मेरे से कोई सन्तुष्ट नहीं तो वह उसकी बात है। बाकी शुभ भावना, सच्चाई का आज नहीं तो कल रिकार्ड बजेगा। किसी की स्थिति से मैं अपना रिकार्ड क्यों खराब करूं! मैं ऊपर चोटी की स्थिति में स्थित रहती हूँ, यह बाबा की बहुत बड़ी गृहस्थी है, हम पार्ट बजा रहे हैं। मैं गृहस्थी नहीं हूँ। मेरा बाबा चोटी पर है तो मैं नीचे क्यों आऊं।

8) बाबा ने हमें सेकण्ड में संकल्पों को स्टॉप करने की शक्ति दी है। बीच बीच में मैं अपने संकल्पों को स्टाप कर लेती हूँ। मैं कभी अपने समय वा शक्ति को वेस्ट नहीं करती हूँ।

9) मैं रात को भी जाग करके बाबा से बहुत मीठी मीठी रूहरूहान करती हूँ। कई बार मेरे सामने एक दृष्य आता - जैसे बाबा मेरे से क्वेश्चन पूछता जाता और मैं हाँ ना में रेसपान्ड कर रही हूँ। बाबा मुझे रिमार्क भी देता जाता। ऐसे लगता जैसे बाबा मेरा पेपर ले रहा है।

10) बाबा प्रश्न पूछता – बच्ची तुम्हें पूरा वैराग्य है? तुम आज्ञाकारी हो? सदा श्रीमत पर चलती हो? सदा स्मृति में रहती हो? तुम्हारी किसी में भी रग तो नहीं है? सदा शुभचिंतन में रहती हो? वृत्ति सदा उपराम है? कभी उदासी आती है? तुम्हारा कोई विरोधी है? कोई से दुश्मनी है? फिर बाबा स्वयं ही रिमार्क देता बच्ची तुम सबमें पास हो। तुम सदैव ऊपर रहो। मैं भी देखती हूँ मैं बिल्कुल क्लीयर साफ आइना हूँ। मैं देह से उपराम हूँ, अब कर्मातीत बन बाबा के पास जाना है।

11) मैं अपने आप से सन्तुष्ट हूँ, हमारे से सब सन्तुष्ट हैं। मेरी वृत्ति में सबके प्रति शुभ भावना है, प्यार है। मेरी अपनी यह स्थिति है। मेरी कहाँ भी आंख नहीं डूबती है।